साहित्य दर्पण (प्रथम परिच्छेद)

विश्वनाथ कविराज : एक परिचय

साहित्यरूपी सागर के कर्णधार, कविसूक्ति रत्नाकर तथा अष्टादशभाषावारविलासिनीभुजङ्ग आदि उपाधियों से विभूषित कविराज ने अपने ग्रन्थ 'साहित्यदर्पण' में काव्यशास्त्र के विषयों को बहुत सरलता से अभिव्यक्त किया गया है। इनके ग्रन्थ 'साहित्यदर्पण' ने अपनी सरलता, बोधगम्यता तथा व्यापकता के कारण बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की है। इन ग्रन्थ में काव्य के सभी तत्त्वों का विवेचन है। इस ग्रन्थ में श्रव्य काव्यों के पूर्ण विवरण के साथ-साथ दृश्य काव्यों (रूपकों) की विभिन्न विशेषताओं और भेदों का भी विस्तृत विवरण दिया गया है। विश्वनाथ ने इस ग्रन्थ की रचना करने में प्राचीन अलङ्कारिकों का बहुत कुछ अनुकरण किया है तथापि उनकी अपनी निजी विशिष्टा है। **'वाक्य रसात्मकं काव्यम्'** कहकर उन्होंने काव्य का मौलिक लक्षण प्रतिपादित किया। मम्मट की विषय-प्रतिपादन की पद्धति दुरूह तथा जटिल है। इसके विपरीत, विश्वनाथ ने काव्यशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र के दुरुह विषयों को भी सरलता तथा स्पष्टता से अभिव्यक्त किया है।

विश्वनाथ का जीवनवृत्त तथा समय

विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थों में अपना स्वल्प परिचय दिया है। इस परिचय से यह विदित होता है कि वे उत्कल के किसी प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। विश्वनाथ के प्रपितामह का नाम नारायण था। नारायण स्वयं भी महान् विद्वान थे और उन्होंने अलङ्कारशास्त्र पर एक ग्रन्थ की रचना की थी।

"तत्प्राणत्वं मास्मद्वद्धप्रपितामहसहृदयगोष्ठीकविपण्डितमुख्य श्रीनारायण पादैरूक्तम्"॥

साहित्यदर्पण 3, 2-3 की वृत्ति से

विश्वनाथ के पिता का नाम चन्द्रशेखर था। 'साहित्यदर्पण के अन्त में इनका उल्लेख है। चन्द्रशेखर भी उत्तम कवि और विद्वान थे। इन दो ग्रन्थों—'पुष्पमाला' और 'भाषार्णव' का उल्लेख विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' में किया है। अपने पिता के अनेक श्लोकों को भी इन्होंने साहित्यदर्पण में उद्धृत किया है।

"श्री चन्द्रशेखरमहाकविचन्द्रसूनु श्रीविश्वनाथकविराजकृतं प्रबन्धम्।
साहित्यदर्पणममुं सुधियो विलोक्य साहित्यतत्त्वमखिलं सुखमेव वित्तं॥"

साहित्यदर्पण 10, 100

विश्वनाथ कविराज और आलंकारिक दोनों हैं। सम्भवत: कवि पहले और आलङ्कारिक बाद में।

विश्वनाथ कविराजप्रणीत 'काव्यप्रकाशदर्पण' की यह उक्ति यह दर्शाती है कि इनके पिता और पितामह कलिङ्ग देश के उच्चाधिकारी रहे हों—

"यदाहु: श्री कलिङ्ग भूमण्डलाखण्डलमहाराजाधिराजश्रीनर सिंह।
देवसभायां धर्मदत्तं स्थगयन्त:..... अस्मत्पितामहश्रीनारायणपादा:"॥

विश्वनाथ ने अपने पिता को महापात्र, चतुर्दशभाषाविलासिनीभुजङ्ग, महाकवीश्वर तथा सन्धिविग्रहिक इन विशेषणों से विभूषित किया है। इनमें से इनके पिता श्री चन्द्रशेखर और विश्वनाथ कविराज 'महापात्र' और 'सन्धिविग्रहिक' दोनों हैं। 'सन्धिविग्रहिक' उस मन्त्री को कहते हैं जो अन्य राजाओं के साथ व्यवहार्य नीति का निर्णय करे और सन्धि या विग्रह कराये। वर्तमान समय में इसको Foreign Minister और Defence Minister कहते हैं।

साहित्यदर्पण के पदों से यह विदित है कि विश्वनाथ वैष्णव मत अनुयायी थे। इस मत के प्रति उनकी आस्था का प्रमाण 'साहित्यदर्पण' के प्रथम परिच्छेद में काव्य प्रयोजन की व्याख्या तथा ग्रन्थ के अन्तिम श्लोक में मिलते हैं।

"किञ्च काव्याद्धर्मप्राप्तिर्भगवन्नारायण चरणारविन्दस्वादिना''''''स्वर्गे लोके कामधुग्भवति।"
साहित्यदर्पण 1.2

"यावत्प्रसन्नेन्दुनिभानना श्रीनारायणस्याङ्कमलङ्करोति।
तावन्मनः सम्मदयन् कवीनामेष प्रबन्धः प्रथितोऽस्तुलोके"॥ साहित्यदर्पण 10.101

विश्वनाथ का समय

1. साहित्यदर्पण के रचयिता आचार्य विश्वनाथ के समय के विषय में अधिक विवाद नहीं है। साहित्यदर्पण के चतुर्थ परिच्छेद में 'अस्फुटगुणीभूतव्यंग्य' के उदाहरण में निम्न पद्य दिया है–

"सन्धौ सर्वस्वहरणं विग्रहे प्राणनिग्रहः।
अल्लावदीननृपतौ न सन्धिर्न च विग्रह"॥ साहित्यदर्पण 4.14

अर्थात् अलाउद्दीन नामक यवनराज के साथ सन्धि करने पर धन का हरण होता है, युद्ध करने पर प्राणों का नाश होता है। अतः उसके साथ न सन्धि ही ठीक है और न ही युद्ध।

इसके आधार पर यह प्रमाणित होता है कि विश्वनाथ अलाउद्दीन के पश्चात् हुए। अलाउद्दीन का समय 1296-1316 के मध्य माना जाता है। अतः विश्वनाथ का समय 1300 ई. के पश्चात् होना चाहिए।

2. साहित्यदर्पण की एक हस्तलिखित पाण्डुलिपि जम्मू से प्राप्त हुई है, जोकि 1384 ई. में प्रतिलिपि की गई थी। अतः विश्वनाथ 1384 से पहले ही हुए होंगे।

3. विश्वनाथ ने निश्चय अलङ्कार के उदाहरण के रूप में गीतगोविन्द के एक पद को उद्धत किया। जयदेव का समय 12वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है। अतः विश्वनाथ जयदेव के बाद हुए होंगे।

4. विश्वनाथ ने नैषधचरितम्' का श्लोक उद्धृत किया है। श्री हर्ष का समय 1200 से 1250 ई. है।

5. विश्वनाथ ने रूय्यक के 'अलङ्कारसर्वस्व' का बहुत अनुसरण किया। रूय्यक का समय 12 शताब्दी का मध्य भाग माना जाता है। अतः विश्वनाथ का समय 13 शताब्दी के मध्य भाग के पश्चात् होना चाहिए।

6. 'काव्यप्रकाश' की दीपिका टीका के रचयिता विश्वनाथ के पितामह के अनुज थे। यह टीका 1250 ई. में लिखी गई। अतः विश्वनाथ का समय 1300 ई. से 1384 के मध्य मानना तर्कसंगत होगा।

विश्वनाथ की रचनाएँ–विश्वनाथ ने प्रचुर मात्रा में साहित्य का सृजन किया। इनकी प्रसिद्ध रचना 'साहित्यदर्पण' है। साहित्यशास्त्र पर लिखा गया यह ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है। विश्वनाथ केवल काव्यशास्त्र के आचार्य नहीं थे अपितु श्रेष्ठ कवि भी थे। 'साहित्यदर्पण' के उद्धरणों से उनके काव्यों का बोध होता है जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. राघवविलास महाकाव्य, 2. कुवलयाश्वचरित, 3. प्रभावती, 4. चन्द्रकला, 5. प्रशस्तिरत्नावली, 6. साहित्यदर्पण, 7. काव्यप्रकाशदर्पण, 8. नरसिंहविजय।

साहित्यदर्पण–'साहित्यदर्पण' एक विशाल ग्रन्थ है। इसमें काव्य के सभी तत्त्वों और अङ्गों की विशद विवेचना की गई है। 'साहित्यदर्पण' 10 परिच्छेदों में विभक्त है। इसमें काव्य के सभी तत्त्वों को सरलता से अभिव्यक्त किया गया है। विश्वनाथ ने इस ग्रन्थ को तीन भागों में लिखा है, कारिका, वृत्ति और उदाहरण। विश्वनाथ ने अधिकांश उदाहरण प्राचीन काव्यों से लिए हैं। कुछ उदाहरण उनकी स्वयं की रचनाओं में से उद्धृत हैं तथा कुछ उनके पिता तथा प्रपितामह के ग्रन्थों से अवतरित हैं।

1. **प्रथम परिच्छेद**–पहले परिच्छेद में मंगलाचरण के बाद काव्य के प्रयोजन को बताया गया है–

"चतुवर्गफलप्राप्ति सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते"॥ साहित्यदर्पण 1.2

तत्पश्चात् मम्मट आदि प्राचीन आचार्यों के काव्य के लक्षण का खण्डन करके विश्वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा स्वीकार करते हुए 'वाक्य रसात्मकं काव्यम्' इस लक्षण का प्रतिपादन किया। अन्त में काव्य के दोष, गुण अलङ्कार आदि का काव्य के साथ सम्बन्ध का विवेचन किया गया है।

2026.02.06 10:52

2. **द्वितीय परिच्छेद**—द्वितीय परिच्छेद में शब्द, अर्थ का तथा शब्द-शक्तियों-अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना के स्वरूप तथा भेदों का विवेचन किया गया है। मम्मट की आलोचना के साथ ही विश्वनाथ ने तात्पर्या वृत्ति तथा तात्पयार्थ का भी वर्णन किया है।

3. **तृतीय परिच्छेद**—तृतीय परिच्छेद में मुख्य रूप से रस का प्रतिपादन किया गया है। विश्वनाथ ने नाट्यशास्त्र के रससूत्र की व्याख्या की है। तदनन्तर विभावों के स्वरूप नायक के भेद, उनके गुणों का वर्णन किया गया है। अनुभावों, सात्विक भावों, व्यभिचारी भावों तथा स्थायी भावों के स्वरूप तथा भेदों का विवेचन किया है। अन्त में भाव, रसा-भास, भावा-भास, भाव-शक्ति, भावोदय, भाव-सन्धि तथा भावसबलता का वर्णन किया गया है।

4. **चतुर्थ परिच्छेद**—चौथे परिच्छेद में विश्वनाथ ने काव्य के भेदों ध्वनि तथा गुणीभूतव्यङ्ग्य के स्वरूप तथा भेदों का विवेचन किया गया है।

5. **पञ्चम परिच्छेद**—पाँचवे परिच्छेद में व्यञ्जना वृत्ति की स्थापना की है। विश्वनाथ ने रसनावृत्ति की नई उद्भावना की है। उनका मानना है कि व्यङ्ग्य अर्थ का बोध कराने वाली व्यञ्जना वृत्ति जब रस को अभिव्यक्त करती है तो यह रसना वृत्ति कहलाती है।

6. **षष्ठ परिच्छेद**—छठे परिच्छेद में सर्वप्रथम रूपकों के दस भेदों और उपरूपकों का विशद विवेचन किया गया है। इसके बाद रूपकों और उपरूपकों के विभिन्न भेदों का निरूपण किया गया है। इस प्रकरण में विश्वनाथ ने दशरूपक का अनुकरण किया है। इसके बाद श्रव्य काव्य के विविध भेदों का विशद वर्णन किया गया है।

7. **सप्तम परिच्छेद**—सातवें परिच्छेद में दोषों का वर्णन किया गया है जिसके अन्तर्गत पदगत दोष, पदांशगत दोष, वाक्यगत दोष, अर्थगत दोष तथा रस दोषों तथा अन्त में अलङ्कारगत दोषों का निरूपण किया गया है।

8. **अष्टम परिच्छेद**—आठवें परिच्छेद में गुणों का विवेचन करते हुए माधुर्य, ओज, प्रसाद तीन गुणों का विवेचन हुआ है।

9. **नवम परिच्छेद**—इस परिच्छेद में रीतियों का विवेचन किया गया है। रीति के भेदों-प्रभेदों की विस्तृत व्याख्या करते हुए चार रीतियों—वैदर्भी, गौडी लाटी और पाञ्चाली रीति का विस्तार से विवेचन किया गया है।

10. **दशम परिच्छेद**—इस परिच्छेद में अलङ्कारों का विवेचन किया गया है। विश्वनाथ ने सात शब्दालङ्कारों तथा 75 अर्थालङ्कारों का विवेचन किया है। साथ ही इनके भेदों-प्रभेदों उनके मिश्रण संसृष्टि और सङ्कर का भी वर्णन किया है।

साहित्य दर्पण की प्राचीन टीकाएँ

साहित्यदर्पण अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ है, इस पर निम्नलिखित टीकाएँ लिखी गईं—

1. **लोचन टीका**—'साहित्यदर्पण' की इस टीका की रचना विश्वनाथ के पुत्र अनन्तदास ने की। यह संक्षिप्त तथा प्रसंगानुकूल है। यह प्रकाशित हो चुकी है।

2. **विवृत्ति टीका**—इस टीका को रामचरण तर्कवागीश ने 1701 ई. लिखा था। यह विस्तृत रूप में लिखी गयी है। इसका प्रकाशन हो चुका है।

3. **टिप्पण टीका**—यह मथुरानाथ शुक्ल द्वारा रचित है परन्तु यह अभी प्रकाशित नहीं हुई है।

4. **प्रभा टीका**—यह टीका श्री गोपीनाथ द्वारा रचित है परन्तु यह भी अभी तक प्रकाशित नहीं हो सकी है।

5. **विज्ञप्रिया टीका**—यह टीका माहेश्वर भट्ट द्वारा रचित है, यह टीका प्रकाशित हो चुकी है। यह विस्तृत तथा विद्वतापूर्ण है।

'साहित्यदर्पण' अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ है। इस पर अनेक टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं। इनमें डॉ. पी.वी. काणे, आचार्य कृष्णमोहन शास्त्री, डॉ. सत्यव्रत सिंह, डॉ. निरूपण विद्यालङ्कार आदि अत्यन्त लोकप्रिय हैं।